विचार बिन्दु

वृक्ष खुद गर्मी सहन कर शरण में आये राहगीर को गर्मी से बचाता है। –कालिदास

वर्षाकाल में आयुर्वेद ऋतुचर्या

आयुर्वेद में दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, रतिचर्या, स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त, आहार, विहार आदि स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के उपयोगी और रणनीतिक उपाय हैं। पर्यावरण और पारिस्थिक तंत्र के साथ हमारे रिश्तों की अनवरत सार-संभाल या अनुकूलन ही ऋतुचर्या है। यह अनुकूलन ही धातुसाम्य और दोष साम्य रखता है। यही हमें रोगों से बचाता है या आयुर्वेद की भाषा में कहें तो अनागत रोगों का प्रतिकार या विकार-अनुत्पत्ति में सहायक है। आज की चर्चा वर्षाऋतु में स्वास्थ्य रक्षा के विविध उपायों पर केन्द्रित है, जिसके मुख्य शास्त्रीय स्त्रोत चरकसंहिता (च.सू.6.33-40), सुश्रुतसंहिता (सु.उ.64.46-55) एवं अष्टांगहृदय (अ.हृ.सू.3.42-48)हैं। ऋतुसंहार (2.1-29) में वर्षाऋतु का आँखों-देखा हाल रोचक है। स्वस्थवृत्त पर प्रकाशित समकालीन वैज्ञानिक शोध, जो लगभग नगण्य है, का भी सहारा लिया गया है। आयुर्वेदाचार्यों के अनुभवजन्य ज्ञान भी यहाँ समाहित है। एक महत्वपूर्ण बात प्रारंभ में ही बताना उपयोगी रहेगा कि संहिताओं में उपलब्ध जानकारी का मूल स्त्रोत लगभग आठवीं शताब्दी ईसापूर्व से लेकर सातवीं शताब्दी के मध्य का है। अतः ऋतुचर्या पर उपलब्ध कुछ सलाह या निर्देश ऐसे भी हैं जिनकी समकालीन सार्थकता को आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों के सन्दर्भ में सावधानीपूर्वक समझते हुये उपयोग में लेना ठीक रहेगा।

वर्षा ऋतु आते-आते, शिशिर, बसंत एवं ग्रीष्म ऋतु के प्रभाव से कमजोर हुये शरीर की अग्नि या भूख वात आदि दोषों से मंद पड़ती जाती है। प्रायः बादलों की छाया, नमी के कारण शीतल हुई हवा, मिट्टी में पानी पड़ने पर निकलने वाली शुरुआती भाप, भोजन का अम्लविपाक होना और सतही जल में प्रदूषण बढ़ जाने से जठराग्नि मंद हो जाती है। वात कुपित होकर अन्य दोषों पर भी प्रभाव पड़ता है। इस कारण वर्षा ऋतु में आहार-विहार में बड़ी सावधानी रखना आवश्यक है। आहार-विहार ऐसा हो जिसमे मुख्यतया वात के शमन के साथ ही कफ और पित्त का शमन भी हो। जठराग्नि चूँकि मंद रहती है, अतः भोजन का अग्निवर्धक होना आवश्यक है। सूत्र रूप में कहें तो वात शमन एवं जठराग्नि को दीप्त किये बिना वर्षा ऋतु में बीमारी से बच पाना संभव नहीं है। वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में ही, अपने आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से समुचित वमन, विरेचन, स्वेदन, मर्दन आदि से शरीर में संचित दोषों का शोधन करते हुये आस्थापन या निरूहणबस्ति का प्रयोग करना चाहिये।

खान-पान में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जब तक पहले खाया हुआ भोजन ठीक से पच न जाये, तब तक पुनः भोजन नहीं करना चाहिये। वर्षा ऋतु में आराम से पच जाने वाले खाद्य पदार्थ लेना स्वास्थ्यकर रहता है। मधुर, अम्ल एवं लवण रसों का सेवन, हलका गरम दूध, घी, पुराने जौ, गेहूं व चावल, विशेष कर साठी के चावल लेना लाभकारी होता है। मूंग की दाल का जूस, पुराना शहद, पुराने आसव व अरिष्ट, मस्तु या दही का पानी, सौवर्चल या काला नमक, सैन्धव नमक, पंचपोल (पिप्पली, पीपलामूल, चव्य, चीता, नागरमोथा) का चूर्ण वर्षा ऋतु में बहुत उपयोगी रहते हैं। जिस दिन आकाश में बादल छाये हों, उस दिन खट्टे, नमकीन व स्निग्ध खाद्य पदार्थों के साथ सूखे चने-चबैने का आनंद लिया जा सकता है। ये सब लघु होने से जल्दी पच जाते हैं। रुक्ष व उष्ण खाद्य पदार्थ, नये अन्न, बहुत ठंडा पानी आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिये। छाछ या मठा, सत्तूके घोल आदि से बचना ही श्रेयस्कर है।

वर्षा ऋतु में नदियों, तालाबों और पोखरों में सिमट-सिमट कर आने वाला सतही जल अपने साथ बड़ी गन्दगी बहाकर लाता है। भारत में तीव्र आर्थिक विकास, साक्षरता दर में सुधार, और बेहतर जल स्त्रोतों की व्यापक पहुंच के बावज़ूद वर्ष 2011 की जनगणना में यह पाया गया कि 70 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों में शौचालय नहीं है। स्वाभाविक है कि पूरे देश के नदी-नाले, तालाब, पोखर और यहाँ तक कि कुओं के पानी में कॉलिफोर्म बैक्टीरिया भारी संख्या में पाये जाते हैं। वर्षानादेयमुदकानाम् (च.सू. 25.39) के द्वारा चरक ने स्पष्ट किया है कि बरसात के दिनों में नदियों का जल प्रकृति से ही अहितकर होता है। देश भर के प्रदूषण नियंत्रण मंडलों के आंकड़े और वैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर देश की नदियों के प्रदूषण पर प्रकाशित 2000 शोधपत्र एवं भारत के जल प्रदूषण पर 7500 शोधपत्र गवाह हैं कि महर्षि चरक तब तो सही थे ही, आज 3000 साल बाद तो उनका कथन हर ऋतु के लिये सही है। भारत में आज कोई ऐसी नदी नहीं है जो नगरीय मल-जल या औद्योगिक प्रदूषण से प्रदूषित न हो। उपचार के बिना कोई सतही जल पीने योग्य नहीं बचा है। यहाँ तक कि भारत की सबसे पूज्य और पवित्र नदी का जल भी आज समुचित उपचार के बिना पीने के पूर्णतः अयोग्य है। अतः बिल्कुल साफ़ पानी ही पीने में प्रयोग करना चाहिये। नहाने के लिये भी नदी, नालों, तालाब या पोखर के पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिये, क्योंकि दूषित पानी में ऋतु-जन्य, परिस्थिति-जन्य एवं पर्यावरण-जन्य संक्रमणकारी और प्रदूषणकारी तत्व मिले रहते हैं। अतः स्वस्थ रहने के लिये दिनचर्या, ऋतु चर्या, स्वस्थवृत्त आदि जैसे सभी साधारण उपाय करना चाहिये।

खान-पान में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जब तक पहले खाया हुआ भोजन ठीक से पच न जाये, तब तक पुनः भोजन नहीं करना चाहिये। वर्षा ऋतु में आराम से पच जाने वाले खाद्य पदार्थ लेना स्वास्थ्यकर रहता है। मधुर, अम्ल एवं लवण रसों का सेवन, हलका गरम दूध, घी, पुराने जौ, गेहूं व चावल, विशेष कर साठी के चावल लेना लाभकारी होता है।

बिना जूते पहने नंगे पैर कीचड़ या गीली मिट्टी में चलना ठीक नहीं होता। गीले कपड़े नहीं पहनना चाहिये। वस्त्रों को समय-समय पर धूप में डालते रहना चाहिये या धोकर और सुखाकर अच्छी तरह प्रेस करने के बाद पहनने चाहिये। रहने की जगह भी ऐसी हो जहाँ सीलन या वर्षा की बौछारें न पहुँचती हों। वर्षा ऋतु में दिन में नहीं सोना चाहिये। अधिक परिश्रम करना, या धूप या ओस में बहुत ज्यादा समय तक रहना भी स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। बहुत अधिक व्यायाम या सेक्स भी वर्षा ऋतु में ठीक नहीं होता, हालाँकि आत्रेय विरचित सारसंग्रह में उपवन में टहलना और नियमित व्यायाम शक्ति संचय के लिये कल्याणकारी माना गया है। वर्षाऋतु के अन्त में जब शरदऋतु आने वाली होती है तब तक शरीर में पित्त का संचय होता रहता है और शरद ऋतु के आते ही संचित पित्त कुपित होने लगता है। अतः वर्षाऋतु के अन्त में अपने आयुर्वेदाचार्य की सलाह से तिक्तघृत या महातिक्तघृत का प्रयोग लाभकारी होता है।

भारत में छह प्रमुख वेक्टर जनित रोगों का भारी प्रकोप है। इनमें मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, फाइलेरिएसिस, जापानी एन्सेफलाइटिस और विसरललि शमानियासिस शामिल हैं जो जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से बढ़ सकते हैं। वर्षा ऋतु में तापमान की अधिकता के साथ ही जल की प्रचुरता से बैक्टीरिया, वायरस, मच्छर, मक्खी आदि का प्रकोप भी बढ़ जाता है। अध्ययन बताते हैं कि वर्षाऋतु में डेंगू-संक्रमित मच्छरों का प्रतिशत बढ़ जाने से आगे चलकर उनकी संक्रामकता बढ़ जाती है। साथ ही सर्दी, खांसी, जुखाम, बुखार, अपच, डायरिया आदि का प्रकोप भी बढ़ जाता है। ऐसी दशा में बीमार पड़ने पर प्रायः आयुर्वेद की वे औषधियां जो एन्टी-वायरल, एन्टी-बैक्टेरियल व एन्टी-इन्फेक्टिव प्रभाव वाली होती हैं उनसे शीघ्रता से लाभ मिलता है। विविध प्रकार के वायरल संक्रमण के कारण रक्त में प्लेटलेट्स की संख्या में भारी कमी जानलेवा हो सकती है। अतः तुलसी, गुडूची, कालमेघ जैसे औषधीय पौधों से प्राप्त मानकीकृत औषधियाँ लाभकारी हो सकती हैं। इन प्रजातियों को घरों के आसपास उगाकर रखना और आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से चिकित्सकीय उपयोग जीवन-रक्षा में मददगार हो सकता है।

इस सब चर्चा का हमारे लिये महत्व यह है कि यदि स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ नहीं करना है तो समुचित ऋतुचर्या का पालन करना चाहिये। इससे अनावश्यक बीमार पड़ने से होने वालीधन की बर्बादी से बचा जा सकता है। दूसरी बात यह भी है कि ऋतुचर्या के पालन का अर्थ यह नहीं है कि आयुर्वेदोक्त दिनचर्या, रात्रिचर्या, स्वस्थवृत्त या सद्वृत्त आदि से छुटकारा मिल गया। सारांशतः देखें तो वर्षाऋतु में चार बातें सम्भालना आवश्यक है: प्रकुपित वात का शमन, मंद पड़ी जठराग्नि का प्रज्वलन, प्रदूषित जल व खाद्य सामग्री से पूर्ण बचाव, और वेक्टर-बॉर्न बीमारियों से बचाव व चिकित्सा। आचार्य चरक, सुश्रुत एवं वाग्भट आदि ने हालांकि यह स्पष्ट किया है कि वर्षा ऋतु में वात का प्रकोप बढ़ता है किन्तु समकालीन वैज्ञानिक अध्ययन और अनुभवजन्य ज्ञान स्पष्ट करता है कि आज दिनचर्या, रात्रिचर्या या ऋतुचर्या गड्डमड्ड होने के साथ ही प्रज्ञापराध या असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग से मुक्त जीवन जीना दूभर हो रहा है। ऐसी स्थिति में वर्षा ऋतु में केवल वात ही नहीं, बल्कि पित्त व कफ भी ठिकाने से भड़के रहते हैं। इसलिये वर्षाकाल में शरीर को स्वस्थ रखने के लिये केवल वात-नियामक, अग्नि-उद्दीपक और संक्रमण-मुक्त जीवनशैली नहीं बल्कि आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से त्रिदोष-नियामक आहार-विहार और रसायन ही हमारा कल्याण कर सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

थक हार के इजरायल-ईरान की लड़ाई बंद हुई- आओ वर्तमान इजरायल के बारे में कुछ जानें

महावीर सिंह

(यह लेख इजरायल, अरब देशों के तनाव से संबंधित, केवल कुछ बहुत सामान्य, ऐतिहासिक तथ्य पाठकों तक पहुंचने के लिए है)

बात 1917 की है। संसार प्रथम विश्वयुद्ध में उलझा था। वस्तुत यह युद्ध विशुद्ध रूप से उपनिवेशवादी ताकतों के बीच अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र सुरक्षित रखने और विस्तार देने का था। भारत जैसे गरीब परतंत्र देशों का इस से कोई लेना-देना नहीं था, सिवाय इसके कि अंग्रेजों की भारतीय सेनाओं को भी युद्ध में झोंका गया। इस युद्ध में ब्रिटेन, फ्रांस, अमरीका, रूस, इटली, जापान इत्यादि देश एक तरफ थे और जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, ऑटोमन साम्राज्य (तुर्क) आदि दूसरी ओर थे। युद्ध सभी देशों की आर्थिक हालत पतली कर देता है। ब्रिटेन, अमरीका को भी जन सहयोग से धन प्राप्ति व अन्य प्रकार से सहयोग की आवश्यकता थी। समृद्ध यहूदी व्यवसायों में और आम यहूदियों ने हर प्रकार से इनकी सहायता की।

इस विविध प्रकार के सहयोग के फलस्वरूप ब्रिटेन ने पूरे संसार में बिखरे यहूदियों को उपकृत किया। 2 नवंबर 1917 में ब्रिटेन के विदेश मंत्री बालफोर ने एक आधिकारिक वक्तव्य दिया जिसे बालफोर घोषणा के रूप में जाना जाता है। इसका सार था कि फिलिस्तीन में यहूदियों के लिए एक राष्ट्रीय घर स्थापना के प्रति ब्रिटेन का समर्थन था। महत्वपूर्ण यह है कि यह पत्र एक प्रसिद्ध व्यवसाई व जियोनी संघ के अध्यक्ष वाल्टर रोथ्सचाइल्ड को लिखा गया। यह मात्र एक घोषणा थी। इजरायल देश की स्थापना तो कालांतर में 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्ताव के जरिए हुई। बालफोर घोषणा का असर यह हुआ कि जिन-जिन मध्यपूर्व यूरोपियन देश, जिनमें यहूदी विरोधी भावनाएं थी वहां से व अन्य पश्चिमी देशों से यहूदी इस क्षेत्र में आकर बसने लगे। 1900-17 के बीच, अनुमानत, जहां 50 हजार से भी कम यहूदी फिलिस्तीन क्षेत्र में थे, 1948 तक इनकी संख्या बढ़ कर 6-7 लाख हो गई। अनुमान है कि 2-ढाई लाख यहूदी तो वे थे जो नाजी लहर के चलते जर्मनी छोड़ कर इधर-उधर हो गए थे।

विश्वयुद्ध समाप्ति पर विजय शक्तियों ने पराजित ऑटोमन साम्राज्य के भूभाग का विभाजन विभिन्न अरब मुल्कों में कर दिया। नए बने देश फिलिस्तीन, जॉर्डन, सीरिया व इराक पर फ्रांस, ब्रिटेन का कब्जा हो गया जिसका गुप्त समझौता, युद्ध समाप्ति के काफी पहले 1916 में ही दोनों देश कर चुके थे। विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद गठित लीग आफ नेशन्स ने कुछ भूभागों का सामान्य प्रशासन चलाने के लिए अलग-अलग विजेता राष्ट्रों को अधिकृत किया। इन्हें मैनडेटेड क्षेत्र कहा गया। फिलिस्तीन का मैंडेट ब्रिटेन को सौंपा गया। फिर आ गया सेकेंड वर्ल्ड वार। नाजीवाद के अत्याचारों, नरसंहार आदि के चलते बहुत बड़ी संख्या में यहूदी जर्मनी छोड़ अन्य देशों में चले गए और यह अलग यहूदी राज्य की स्थापन की मांग का प्रमुख कारण बन गया। विश्व युद्ध की समाप्ति पर विश्व के देशों के बीच शांति स्थापित रखने, उनकी समस्याओं को निपटाने के लिए लीग आफ नेशन्स के स्थान पर, संयुक्त राष्ट्र के नाम के नए संगठन की स्थापना की जो अब इस कार्य के लिए लगभग 100 प्रतिशत असफल सिद्ध हो चुका है। ब्रिटेन में फिलिस्तीन क्षेत्र को, आगे के फैसलों के लिए, यूएनओ से अनुरोध किया। यूएनओ ने विभिन्न देशों की एक समिति गठित कर विचार मांगे। समिति में दो विकल्प सामने आए। एक था कि यहूदियों के लिए व फिलिस्तीनियों के लिए दो अलग-अलग देश बनाए जाए और दूसरा था कि दो स्वायत शासन क्षेत्र स्थापित किए जाएं जिन में से एक में फिलिस्तीनियों की व दूसरे में यहूदियों की अधिसंख्या हो और इन दोनों का एक संघ हो।

इस्लामिक अरब राष्ट्रों को दोनों नामंजूर थे और यहूदियों के नेताओं को स्वायत क्षेत्रों वाला प्रस्ताव अस्वीकार था। अंततः 29 नवंबर 1947 को बहुमत से यूएनओ का प्रस्ताव संख्या 181 पारित हुआ और स्वतंत्र यहूदी राज्य इजरायल की स्थापना हुई। मई 1948 में अमरीका, सोवियत संघ व उससे संबद्ध पोलैंड आदि में इजरायल को मान्यता दे दी। अमरीका, रूस के अतिरिक्त ईरान जो अब इजरायल का सबसे बड़ा दुश्मन है और तुर्क इजरायल की स्थापना के तत्काल बाद मान्यता देने वाले देश थे।

यूएनओ प्रस्ताव के बाद भी अरब देशों-मिश्र, सीरिया, जॉर्डन, इराक, लेबनान ने स्वतंत्र इजरायल को मान्यता न देकर, 1948 में उसके हिस्से वाले फिलिस्तीन में अरब वॉलंटियर्स के रूप में लड़ाई जारी रखी। इजरायल की भी कोई संगठित सेना नहीं थी। फिलिस्तीन में बसे यहूदियों के विभिन्न हथियार बंद संगठन बने हुए थे, उन्होंने अरब लीग वॉलंटियर्स या सैनिकों के साथ युद्ध किया। अंततः 1949 में यूएनओ के प्रयासों से, इजरायल वो सभी लड़ने वाले अरब स्टेट्स में अलग अलग युद्ध विराम हुआ और युद्धविराम रेखा बतौर अस्थाई सीमा रेखा कायम हुई।

इसके बाद भी इजरायल व पड़ोसी देशों या स्वतंत्रता चाहने वाले संगठनों अथवा इजरायल के गठन को अस्वीकार करने वाले समूहों में युद्धों का सिलसिला जारी रहा। 1967 में 8 अरब देशों में इजरायल का रिकॉग्निशन समाप्त किया। बाद में धीरे-धीरे वापिस भी राजनयिक संबंध बनाए। 1973 में फिर एक युद्ध हुआ जो योमकिप्पुर युद्ध के नाम से जाना जाता है। यह युद्ध सिनाय प्रायद्वीप और गोलन हाइटस, जो 1967 के युद्ध में इजरायल ने कब्जा ली थी, उनका कब्जा पुनः इजरायल से पाने के लिए लड़ा गया।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि इजरायल अरब देशों के बीच लगातार संघर्ष चलता आ रहा है, अब भी विभिन्न प्रकार से यह चल रहा है।

यहां यह स्मरण रखना भी बड़ा ही दिलचस्प है कि फिलिस्तीन का क्षेत्र यहूदियों, मुसलमानों व ईसाईयों सभी के लिए मायने रखता है। येरुशलम यही है जो तीनों धर्मों के लिए पवित्र है। इन तीनों धर्मों के धर्मावलंबियों में संघर्षों का इतिहास भी लंबा है। यह ओर भी दिलचस्प है कि तीनों धर्मों का आदिपुरुष या भगवान एक ही है। मोटे रूप से, कुछ भिन्नताएं को छोड़ कर तीनों ही एकेशवरवादी धर्म है। पाठकों के लिए इस संबंध में कुछ जानना रुचिकर होगा। अगले किसी अंक में इस पर मोटामोटी रूप से विचार करेंगे।

अब चलते चलते इस पर विचार करना कि विश्व में जहां भी देशों, संगठनों में जो तनाव चल रहे है उनके पीछे वैश्विक किरदार जो दिखते हैं वही हैं कोई पर्दे के पीछे कोई ओर होते हैं? ओर इन सारे संघर्षों में, आम आदमी की क्या हैसियत सिवाय आग्नेय अस्त्रों का चारा बनने के या किसी के पक्ष विपक्ष में जुलूस निकालने, नारे लगाने के!!!! गाजा में या अन्यत्र मारे जा रहे निहत्थों का, प्रताड़ितों क्या दोष?

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

अपशिष्ट पदार्थ डालने की वजह से नहर का अस्तित्व खतरे में पड़ा

देश की आजादी से पहले पावटा कस्बे में सिंचाई एवं पेयजल व्यवस्था दुरुस्त रखने के लिए नहर का निर्माण करवाया था

पावटा, (निसं)। कस्बे की पुरा महत्व की नहर में अपशिष्ट पदार्थ डालने की वजह से नहर का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। हालात ये हैं कि नहर से उठने वाली दुर्गंध के कारण लोगों को नाक पर रूमाल या हाथ रखकर गुजरना पड़ता है, जिससे आम-आदमी परेशान हैं, लेकिन जिम्मेदारों को इसकी परवाह नहीं है।

स्थानीय बाशिंदों ने बताया कि पावटा कस्बे में सिंचाई एवं पेयजल व्यवस्था दुरुस्त रखने के लिए नहर का निर्माण करवाया था। देश की आजादी के बाद तक इसका उपयोग हुआ, लेकिन बढ़ती आबादी एवं पेयजल के अन्यस्त्रोत विकसित होने के बाद इस नहर की उपेक्षा शुरू हो गई। नतीजतन, वर्तमान में यह नहर न सिर्फ अतिक्रमण का शिकार हो गई, बल्कि आसपास के लोगों द्वारा इसमें कचरा डाला जा रहा है, जिसके चलते इसने नहर के बदले कचरागाह का रूप ले लिया है। जानकारों की मानें तो यदि जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों और नगरपालिका व प्रशासन ने इसकी सुध नहीं ली तो नहर का अस्तित्व मिट जाएगा। यहां नहर होना बीते दिनों की बात हो जाएगी और इसके स्थान पर पक्के निर्माण हो जाएंगे। नहर में डाले जाने वाले कचरे से उठने वाली सड़ांध हवा के रुख बदलते रहने पर आसपास क्षेत्र में फैलती है, जो नहर के आसपास के दुकानदारों, बाशिंदों, ग्राहकों, राहगीरों एवं वाहन चालकों को तकलीफदेय साबित हो रही है।

नहर से चंद मीटर दूरी पर ही विद्यालय एवं लोकल बस स्टैण्ड बना हुआ है। नहर से उठने वाले दुर्गंध से बस यात्री व विद्यार्थी एवं राहगीर भी परेशान रहते हैं। नहर को कचरागाह बनाने के बावजूद शासन-प्रशासन को इसकी अनदेखी कर ही रहा है, लेकिन शहर के पर्यावरण प्रेमी भी मौन है।

पावटा कस्बे की पुरा महत्व की नहर में अपशिष्ट पदार्थ डालने से नहर का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।

- **नहर से चंद मीटर दूरी पर ही विद्यालय एवं लोकल बस स्टैण्ड बना हुआ है**
- **नहर से उठने वाले दुर्गंध से बस यात्री, विद्यार्थी एवं राहगीर भी परेशान रहते हैं**

यही कारण है कि कुछ लोग स्वयं की सुविधा के लिए नहर में कचरा डालते रहते हैं, जो इसमें सड़ता रहता है। जानकारों का कहना है कि इस नहर का भी सौन्दर्यीकरण किया जा सकता है।

सिंचाई विभाग एईएन शैलेन्द्र गढ़वाल ने बताया कि विभाग को बिना सूचित किए नगरपालिका द्वारा नहर की खुदाई व सफाई करवाई गई है। खुदाई करवाकर नहर के किनारों पर ही गंदगी छोड़ दी गई ज्योंकि गलत है। नया टेंडर करवाकर नहर पर हो रहे अतिक्रमण व उसकी साफ सफाई करवाई जाएगी।

अंत्योदय संबल शिविर का लोगों को मिल रहा लाभ

आसीन्द, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल, नेगड़िया में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को एक ही स्थान पर विभिन्न विभागीय समस्याओं का समाधान उपलब्ध कराना था। राजस्व, बिजली विभाग, पंचायती राज, चिकित्सा और जल विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। कई समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया। नामांतरण और पट्टे जारी करने के साथ खाद्य सुरक्षा संबंधी कार्यों का भी निपटारा हुआ।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओमप्रकाश मेहरा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल शिविर का नेगड़िया में अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने जनसुनवाई कर आमजन के आवश्यक कार्यों का त्वरित निस्तारण किया और विभिन्न विभागों की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मेहरा ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नेगड़िया में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। वहीं खातोंला गांव के ग्रामीणों ने बिजली, पानी की समस्या को लेकर अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओम प्रकाश मेहरा को ज्ञापन सौंपा। चिकित्सा विभाग ने दिव्यगजनों आयुष्मान कार्ड गर्भवती महिलाओं के टीकाकरण, बच्चों के टीकाकरण, टीबी रोगियों की जांच, निशुल्क दवा, प्रधानमंत्री आयुष्मान कार्ड का वितरण किया गया। ग्राम पंचायत की नेगडिया सरपंच ने ग्रामीणों से शिविर का लाभ लेने की अपील की थी। ग्रामीणों ने इस पहल की सराहना की। परिवार को निःशुल्क पट्टा प्रदान किया गया। कार्यक्रम में उपखंड अधिकारी रोहित सिंह, तहसीलदार जयसिंह, ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रीतम गुप्ता, डॉ. राजेंद्र मीणा, विकास अधिकारी भंवरसिंह, चिकित्सा विभाग से श्याम सिंह चुंडावत, आशा बैरवा, महेंद्र कुमार, पटवारी भूपेंद्र सिंह, सरस्वती प्रजापत, शबाना बानो, ललित जायसवाल, पारस देवी, सुगना बलाई, आशा सहयोगिनी उपस्थित थी वहीं सभी विभागों की अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। इस शिविर में क्षय रोग पीड़ित रोगियों को महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता आशा बैरवा और पंचायती शिक्षक सुरेश चंद खटीक ने पोषण किट प्रदान किया।

गोविंदगढ़ के वार्ड सात के लोग बूंद-बूंद पानी को तरसे

गोविन्दगढ़/अलवर, (निसं)। गोविंदगढ़ कस्बे के वार्ड नंबर सात गांधी पार्क के पीछे के हालात इतने खराब है कि आए दिन पानी की समस्या से लोग जूझ रहे है। तीन से चार दिन में पानी की सप्लाई दी जाती है। पांच दिन बीत जाने के बाद भी 28 जून को भी पानी की सप्लाई वार्ड नंबर सात के ग्राम वासियों को नहीं मिल पाई। पानी की सप्लाई का भी कोई टाइम टेबल निर्धारित नहीं है, जिससे उपभोक्ताओं को काफी समस्या होती है। कई बार तो रात को पानी की सप्लाई दी जाती है जिससे उपभोक्ताओं को चोरी एवं अन्य घटनाओं का भी डर बना रहता है। रात्रि के समय सप्लाई देने पर जिसकी शिकायत 181 राजस्थान पोर्टल पर भी की गई एवं संबंधित विभाग के कनिष्ठ अभियंता निशा मीणा, सहायक अभियंता जैकी शर्मा, अधिशासी अभियंता महेंद्र कुमार मीणा को दूरभाष के जरिए दी गई। परंतु समस्या का समाधान नहीं किया गया और एक दूसरे पर टालते हुए नजर आए।

- **पांच सौ रुपये में टैंकर मंगवा रहे हैं**

अधिकारी उपभोक्ताओं की पानी की समस्या को हल करने में नाकाम दिखाई दे रहे हैं। लोगों को पानी के लिए तरसना पड़ रहा है। 500 रुपये देकर टैंकरों द्वारा पानी डलवाकर अपनी पूर्ति कर रहे हैं। वार्ड नंबर सात गांधी पार्क के पीछे में ज्यादातर उपभोक्ता सेवानिवृत्त हैं, जिन्हें हर तीसरे दिन 500 रुपये का टैंकर डलवाना पड़ता है।

राशिफल

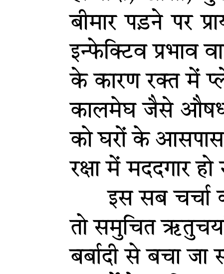

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 29 जून, 2025

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, आश्लेषा नक्षत्र प्रातः 6:34 तक, वज्र योग सायं 5:58 तक, विष्टि करण प्रातः 9:15 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 6:34 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग प्रातः 6:34 तक है। यमघट योग प्रातः 6:34 से सूर्यास्त तक है। आज भद्रा प्रातः 9:15 तक है। शुक्र वृष दिन 2:09 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:22 से 9:05 तक, लाभ-अमृत 9:05 से 12:30 तक, शुभ 2:12 से 3:55 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:20

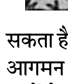

मेष
आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। आज परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

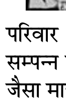

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

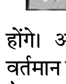

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

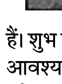

कर्क
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। शुभ कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। आवश्यक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

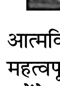

सिंह
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आज परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

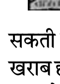

कन्या
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। आज मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

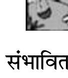

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

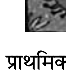

वृश्चिक
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

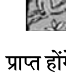

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

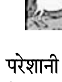

मकर
परिवार कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

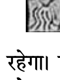

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।